ISSN 2319-9407
www.yuvasamvad.org
www.yuvasamvad.com

नव निर्माण के लिए

युवा संवाद

मई 2022 अंक-231 मूल्य - 30 रुपये

मानवता के प्रतीक "राम"

क्रिप्टोकरेंसी पर इतनी हाय तौबा क्यों?

युवा संवाद

वर्षः 19 ■ अंकः 2 ■ मई, 2022

प्रकाशन एवं संपादन पूर्णतया अवैतनिक

संपादक मंडल

प्रो. कमल नयन काबरा
अरुण कुमार त्रिपाठी
अनिल चमड़िया
योगेन्द्र
अशोक भारत

संपादक
ए. के. अरुण

कला संपादक
संजीव शाश्वती

संपादकीय एवं प्रबंध कार्यालय
167ए / जी.एच.2
पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063
फोन – 7303608800
ईमेल : ysamvad@gmail.com

यह प्रति : 30 रु.

सदस्यता की दरें

वार्षिक	: **300** रु. (व्यक्तिगत)
	: **360** रु. (संस्थागत)
पांच वर्ष	: **1200** रु.
दस वर्ष	: **2000** रु.
आजीवन	: **3000** रु.
विदेशों में	: **200** यूएस डॉलर (पांच साल के लिए)

पत्रिका के लिये सहयोग राशि 'युवा संवाद' के नाम बैंक ड्राफ्ट/चैक से युवा संवाद 167ए/जी.एच.–2, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063 को भेजें। दिल्ली से बाहर के चैक के साथ 50 रु. और जोड़ें। सदस्यता राशि सीधे युवा संवाद के अकाउंट संख्या 028805003109 आई.सी.आई.सी.आई., नई दिल्ली के खाते में भी सीधे जमा कराई जा सकती है। बैंक का IFSC CODE ICIC0000288 **है। राशि जमा कराने के बाद अपना नाम व पूरा पता डाक पिनकोड सहित मोबाइल नं. 09868809602 पर अवश्य एस.एम.एस. करें।**

मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी डॉ. ए. के. अरुण, द्वारा मर्करी प्रिंटर्स, 602, गली जूते वाली, चूड़ीवालान, दिल्ली–06 से मुद्रित एवं उन्हीं के द्वारा 167ए/जी.एच. 2, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063 से प्रकाशित।

संपादक – ए. के. अरुण

RNI NO. : DELHIN/2003 / 9929

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

युवा संवाद से सम्बन्धित किसी भी विवाद का निपटारा दिल्ली की सक्षम अदालत में ही सम्भव होगा।

इस अंक में

यह जो बिहार है	: इफ़्तहार पार्टी और बिहार की...	डॉ. योगेन्द्र	7
अलोकतंत्र	: लोकतंत्र का बुलडोजर पर्व	सत्यम श्रीवास्तव	8
अलोकतंत्र	: यह नाउम्मीदी देखा चाहिए	मनोहर नायक	10
पूंजीवादी उत्पादन	: श्रम और पूंजी के अंतर्सबंध	शैलेन्द्र चौहान	13
किसान आंदोलन	: कॉरपोरेटी गुरूर को तोड़ते...	ए. के. अरुण	15
किसान आंदोलन	: एम.एस.पी. की व्यापक महत्ता	कमलनयन काबरा	21
पृथ्वी और पर्यावरण	: अब केवल आठ साल बचे हैं		29
मानस के राम	: राम : ईश्वरीय मनुष्यता	चिन्मय मिश्र	32
उत्तराखंड	: अधूरेपन में उत्तराखंड	प्रेम पुनेठा	35
स्वयंसेवी संस्थाएं	: विदेशी धन का सवाल	रविन्द्र गोयल	38
क्रिप्टोकरेंसी	: कैश की जगह क्रिप्टो	सचिन श्रीवास्तव	40
पते की बात	: पक्की हैं मस्जिदें तो कच्चे हैं...	प्रियदर्शन	42
जाति व्यवस्था	: जाति व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष	शैलेन्द्र चौहान	44
भूदान	: 'संपत्ति सब रघुपतिकै आहीं'	विवेकानंद माथने	47
बेबाक	: अश्वमेघ यज्ञ का नया घोड़ा	सहीराम	49

स्थाई स्तंभ

पाठक संवादः	4–5
संपादकीय :	6

वेब : www.yuvasamvad.org www.yuvasamvad.com

राम राज में बुल्डोजर ?

तुलसीदास जी ने जिस रामराज्य की परिकल्पना की है, उसकी कई बातें आज भी अनुकरणीय हैं। वे कहते हैं कि 'राम राज बैठे त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका।। बैर न करु काहू सन कोई। राम प्रताप विसमता खोई।।' आज जो भी रामराज्य की परिकल्पना साकार करना चाहते हैं, वे न तो बैर को कम करने का संकल्प करते हैं और न ही विषमता को कम करने का। उन्हें यह बात याद दिलाई जानी चाहिए कि बैर और विषमता के आधार पर किसी अच्छे राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती। न ही बुलडोजर के आधार पर देश को सुंदर और अभय बनाया जा सकता है। हिंदू धर्म में जहां कहीं भी पूजा पाठ का आयोजन होता है, वहां पुरोहित यही नारा लगाते हैं कि जगत का कल्याण हो, प्राणियों में सद्भाव हो। अब अगर धार्मिक आयोजनों के चलते प्राणियों में बैर हो जाए और जगत में तनाव पैदा हो जाए, तो ऐसे आयोजनों का कोई अर्थ नहीं है। इस्लाम का भी अर्थ शांति ही होता है। इसलिए उसके बंदों का काम शांति कायम करना ही होना चाहिए, न कि अशांति फैलाना। हालत यह है कि उच्चतम न्यायालय को यह कहना पड़ा कि उत्तराखंड के रुड़की में आयोजित धर्म संसद में भड़काऊ भाषण हुए तो मुय सचिव जिमेदार होंगे।

रामनवमी, हनुमान जयंती, रमजान के मौके पर और धर्म संसद के बहाने इस देश के विभिन्न हिस्सों में जो कुछ हो रहा है, वह न तो भारत को विश्व गुरु की काल्पनिक पदवी दिलाने वाला है और न ही लोकतंत्र व मानवता को सुरक्षित करने वाला है। अगर स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व के आधार पर बने भारत में सत्ता अकारण ही अपने बल का प्रयोग करेगी और इससे आम जनता अपने आपको असहाय समझेगी तो भारत की छवि धूमिल हो जाएगी। देश में कानून का राज रहना चाहिए, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आम आदमी भयभीत हो जाए। यह सही है कि भारत को सेक्यूलरवाद संभाल नहीं पा रहा है, लेकिन सवाल यह है कि क्या उसे उसके अपने महान मूल्य भी धोखा दे रहे हैं? क्या हम ऐसा देश कहलाएंगे, जिसने अपनी प्राचीन संस्कृति के आधार पर न तो आधुनिकता की व्याख्या करने की कोशिश की और न ही आधुनिकता की रोशनी में अपनी संस्कृति को नए संदर्भ में पहचानना चाहा।

संविधान निर्माता डॉ. भीमराव आंबेडकर ने कहा था कि उन्हें संविधान में बंधुत्व का सिद्धांत शामिल करने के लिए फ्रांसीसी क्रांति से प्रेरणा लेने की आवश्यकता नहीं थी। इसके लिए भारत के भीतर ही बौद्ध दर्शन में मैत्री जैसी अवधारणा मौजूद थी। देशी–विदेशी और परंपरा आधुनिकता का विवाद आज भारत में चरम पर है। इस विवाद की गाज सबसे ज्यादा हिंदू और मुस्लिम रिश्तों पर गिर रही है। इसी विवाद को सुलझाते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा था कि परंपरा मनुष्य का ठहरा हुआ पांव है और आधुनिकता उठा हुआ पांव। इस अवस्था के बिना मनुष्य चल नहीं सकता।

ध्यान रहे कि हमें किसी को जबरदस्ती सहने की न तो कोशिश करनी चाहिए, न ही वैसा भाव रखना चाहिए। यह एक बनावटी किस्म का रिश्ता होता है, जो ज्यादा समय तक चलता नहीं। हमें एक–दूसरे को समझने के लिए कदमताल करते रहना चाहिए और समझकर रिश्तों में संतुलन बिठाना चाहिए। वरना हम कब लड़खड़ा जाएंगे, पता ही नहीं चलेगा। इसीलिए महात्मा गांधी को सहिष्णुता शब्द अच्छा नहीं लगता था। वे सद्भाव या समभाव शब्द को बहुत पसंद करते थे। वे सद्भाव जबरदस्ती कायम करने में यकीन नहीं करते थे। जब उनकी सर्वधर्म प्रार्थनाएं विग्रह का कारण बनने लगीं, तो उन्होंने उन्हें बंद कर दिया और कहा कि उनका आयोजन तभी होगा जब लोग उन्हें समझने लगेंगे। नेताओं को यह बात तो समझनी चाहिए कि किसी के आवास के बाहर हनुमान चालीसा का पाठ करने का कोई धार्मिक विधान नहीं है। फिर कोई भी धार्मिक विधान किसी के घर के आगे जबरन करने का कोई मतलब भी नहीं है। आज अगर हनुमान चालीसा का प्रयोग कहीं हो सकता है, तो राज्य के आतंक का भय मिटाने के लिए किया जाना चाहिए। दूसरी ओर राज्य को भी इतना भयभीत नहीं रहना चाहिए कि नाटकीय आयोजन करने वालों या असहमत दिखने वाली अभिव्यक्तियों पर राजद्रोह का मुकदमा ठोक दिया जाए। निश्चित तौर पर आज भारत में धर्म और राजनीति का अविवेकी मिलन हो गया है। यह सामाजिक कलह का कारण बन रहा है। इससे देश का माहौल बिगड़ रहा है, जो वाकई चिंताजनक है।

ध्यान रहे समाज सिर्फ कानून और राज्य के तंत्र के हांकने से नहीं चलता। समाज का स्वधर्म और स्वविवेक होता है। उसी को स्वराज कहा जाता है। भारत को अगर मजबूत होना है, तो सच्चे स्वराज को समझना होगा। मन के भीतर और बाहर जमा हुए अतिक्रमण और गंदगी को हटाने के लिए बुल्डोजर नहीं, संवाद और प्रेम का प्रयोग करना होगा। ❐